उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में हिन्दी भाषा प्रशिक्षण की प्रभावशीलता का अध्ययन

A Study of Effectiveness of Hindi Language Training in Students of Senior Secondary Level.

उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय

गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर

को

पी-एच.डी.(शिक्षा) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रारूप

शोधकर्ता:

नरेन्द्र सिंह

iase
Deemed
university

शोध निर्देशिका :

डॉ. कंचन शर्मा

विभागाध्यक्ष (शिक्षा)

बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सीटीई)

गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर

जिला-चूरू (राजस्थान) - 331401

2016

शोध – प्रारूप

1.	**शोधकर्ता का नाम**	:	**नरेन्द्र सिंह**
2.	**संस्थान का पता**	:	**उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय, गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर**
3.	**शोध विषय**	:	**उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में हिन्दी भाषा प्रशिक्षण की प्रभावशीलता का अध्ययन** **A Study of Effectiveness of Hindi Language Training in Students of Senior Secondary Level.**

1. –प्रस्तावना :–

मानव द्वारा आदिकाल से ही ज्ञान का संचय किया जा रहा है। प्रत्येक नई पीढ़ी द्वारा कुछ ज्ञान सामाजिक विरासत में प्राप्त हो जाता है और कुछ वह स्वयं ज्ञान में वृद्धि करता है। ज्ञान की यह परम्परागत श्रृंखला ही शिक्षा है जिसके द्वारा मानव ने अपनी सामाजिक, आध्यात्मिक और सामाजिक प्रगति की है। शिक्षा ने ही मानव को पशु स्तर से ऊँचा उठाया है और एक श्रेष्ठ सामाजिक प्राणी बनाया है। इस सामाजिक प्राणी की विचाराभिव्यक्ति का माध्यम भाषा है।

भाषा, भाव, विचार तथा अनुभवों को व्यक्त करने एवं विचार विनिमय का सांकेतिक साधन है। व्यापक अर्थ में भाव प्रकाशन के सभी साधनों को भाषा कहते हैं, परन्तु केवल अंग–प्रत्यंगों के संचालन और अन्य संकेतों के माध्यम से भावों की अभिव्यक्ति में वैसी पूर्णता अभिव्यंजित नहीं होती, जैसी ध्वनि संकेतों के द्वारा व्यक्त होती है। इसलिए आज अधिकतर विद्वान् भाव, विचार तथा अनुभवों को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त होने वाले ध्वनि संकेतों को ही भाषा की संज्ञा देते हैं।

हिन्दी भाषी क्षेत्र की जितनी भौगोलिक व्यापकता है, मानक हिन्दी के शुद्ध उच्चारण की भाषाई समस्या भी उतनी ही विशाल है। हिन्दी भाषा, उत्तर में श्रीनगर और लद्दाख, दक्षिण में कन्याकुमारी तक तथा पूर्व में लेज (अरूणाचल प्रदेश) से कोलकत्ता, पश्चिम में जैसलमेर और सूरत तक बोली जाती है। उत्तरप्रदेश, उत्तरांचल, राजस्थान तो हिन्दी प्रदेश ही हैं साथ ही राष्ट्रभाषा केन्द्र की राजभाषा एवं सम्पूर्ण देश की लोकभाषा एवं राज की अन्तःप्रांतीय सम्पर्क भाषा हिन्दी होने के कारण अहिन्दी भाषी प्रदेशों में भी हिन्दी मातृभाषियों एवं अहिन्दी मातृभाषियों दोनों द्वारा बोली जाती है।

हिन्दी भाषी क्षेत्र की जितनी भौगोलिक व्यापकता है, मानक हिन्दी के शुद्ध उच्चारण की भाषाई समस्या भी उतनी ही विशाल है। हिन्दी भाषा, उत्तर में श्रीनगर और लद्दाख, दक्षिण में कन्याकुमारी तक तथा पूर्व में लेज (अरूणाचल प्रदेश) से कोलकत्ता, पश्चिम में जैसलमेर और सूरत तक बोली जाती है। उत्तरप्रदेश, उत्तरांचल, राजस्थान तो हिन्दी प्रदेश ही हैं साथ ही राष्ट्रभाषा केन्द्र की राजभाषा एवं सम्पूर्ण देश की लोकभाषा एवं राज की अन्तःप्रांतीय सम्पर्क भाषा हिन्दी होने के कारण अहिन्दी भाषी प्रदेशों में भी हिन्दी मातृभाषियों एवं अहिन्दी मातृभाषियों दोनों द्वारा बोली जाती है।

हिन्दी के प्रयोग-क्षेत्र की व्यापकता एवं विविधता की दृष्टि से हिन्दी में उच्चारण एवं वर्तनी में अशुद्धता आना स्वाभाविक है। अपनी मातृभाषा तथा अन्य भारतीय भाषाओं को समझने के लिए बालकों को संस्कृत भाषा का भी अध्ययन करना पड़ता है क्योंकि संस्कृत भाषा के स्तर का सीधा प्रभाव हिन्दी भाषा पर पड़ता है। हिन्दी का परिष्कृत ज्ञान संस्कृत भाषा के ज्ञान के अभाव में असम्भव है। हिन्दी में अधिकतर शब्द तथा व्याकरण संस्कृत भाषा से लिए गए हैं। हिन्दी के शब्दों की साधना, उनके वचन और ध्वनियों का सही ज्ञान शब्दों के उचित प्रयोग, अर्थ भेद ज्ञान के लिए संस्कृत भाषा का ज्ञान जरूरी है। हिन्दी शब्दों की वर्तनी भाषा के कालगत विभिन्न रूपों आदि के अध्ययन के लिए भी संस्कृत का ज्ञान होना आवश्यक है। हिन्दी देवनागरी लिपी में लिखी जाती है। देवनागरी लिपी की विशेषता यह है कि इसमें जैसी बोली जाती है वैसे ही लिखी जाती है। यह गुण संस्कृत,

हिन्दी या कुछ भारतीय भाषाओं को छोड़कर अन्य भाषाओं में प्रायः नहीं मिलता। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए हिन्दी लेखन कार्य में व्याकरण संबंधी अशुद्धियों नहीं होनी चाहिए। लेकिन हमारे दैनिक जीवन में विद्यार्थियों की उत्तर-पुस्तिकाएं इस बात का जीता-जागता उदाहरण है जो व्याकरण संबन्धी अशुद्धियों से भरा पड़ा है। शोधकर्ता ने अनुभव किया है कि उत्तर-पुस्तिकाओं में पर्याप्त संख्या में व्याकरण संबंधी अशुद्धियां होती है। अतः उनमें सुधार करने के लिए आवश्यक प्रयत्न करना चाहिए।

2. अध्ययन का महत्व :-

व्यक्ति की अभिव्यक्ति की सहज वाहिका भाषा है और भाषाओं में हिन्दी का स्थान महत्वपूर्ण है। हिन्दी राजस्थान में शिक्षा का माध्यम है और राज-काज की भाषा भी है। इसके साथ-साथ हिन्दी देश में सम्पर्क, विचार-विनियम का माध्यम भी है।

मातृ-भाषा हिन्दी का शिक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक बालक को अपनी मातृभाषा जानने के लिए एक ऐसी भाषा का ज्ञान आवश्यक है, जिसके माध्यम से वह अपने देश के अन्य भाषा-भाषियों के साथ सम्पर्क स्थापित कर सके। यह ऐसी भाषा है जो अखिल भारतीय स्तर पर सम्पक्र भाषा का कार्य कर सकती है। राष्ट्र के सामने न्यायिक एवं प्रशासनिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक, औद्योगिक एवं वाणिज्यिक, वैज्ञानिक एवं प्राविधिक क्रिया-कलापों के माध्यम बन सके, जिसके द्वारा राष्ट्र की बौद्धिक चेतना का विकास हो सके, जिसके स्वरों में भारतीय आत्मा का स्वर मुखरित हो सके। यह राष्ट्रभाषा अथवा राज-भाषा पूरे राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने वाली होनी चाहिए।

हिन्दी भाषा उच्चारण की जितनी गहरी पेचीदगी है, हिन्दी भाषा के अध्ययन में हिन्दी की उच्चारण संबंधी चेतना उतनी ही शिथिल भी है। यद्यपि सभी भारतीय विश्वविद्यालयों में और हिन्दी का अध्यापन करने वाले हिन्दी भाषी एवं अहिन्दी भाषी प्रदेशों के अधिकांश विद्यालयों में हिन्दी का अध्यापक होता है, किन्तु हिन्दी का उच्चारण हिन्दी भाषा के पाठ्यक्रम में उपेक्षित है। अतः सभी हिन्दी भाषा से जुड़े हुए विद्वजनों को चाहिए कि वे उच्चारण एवं वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को दूर करने के लिए मिलकर प्रयास करें।

हिन्दी का शुद्ध उच्चारण हिन्दी भाषा की अभिव्यक्ति को तो प्रभावशाली बनाएगा, साथ ही वह हिन्दी की लेखन संबंधी अशुद्धियों (व्याकरण की अशुद्धियों) को भी शुद्ध कर सकेगा। इसलिए हिन्दी का शुद्ध उच्चारण एवं शुद्ध लेखन (वर्तनी) दोनों साझी प्रक्रियाएं है। अतः इन्हें साझे अभियान के रूप में अपनाया जाना चाहिए। हिन्दी के प्रश्न पर आज पूरे देश में विवाद खड़ा है। हिन्दी भारत के कुछ प्रदेशों की मातृभाषा है और सम्पूर्ण देश की राष्ट्र भाषा है। मातृभाषा और राष्ट्र भाषा दोनों का अपना–अपना महत्त्व है। वर्तमान समय में भाषा के अध्ययन को अपेक्षाकृत कम महत्त्व दिया जाता है। हमारे देश में यह एक दुर्भाग्य ही है कि यहाँ राष्ट्रभाषा हिन्दी है तथा अहमियत अग्रेंजी भाषा को दिया जाता है। आज हमारे यहाँ अग्रेंजी को प्रगति का प्रर्याय माना जाता है। भारत में अनेक भाषाऐं बोली जाती है। भाषा के आधार पर राज्य विभक्त हैं। किसी एक भाषा को राष्ट्र की उन्नति का आधार बनाने के लिए हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाया गया। हिन्दी भाषा के विकास के बिना देश का पूर्ण विकास संभव नहीं है।

3. अध्ययन का औचित्य :–

हिन्दी भाषा में बालकों के सामने आने वाली कठिनाईयों का अध्ययन करना अति महत्त्वपूर्ण हो जाता है। यह जानने का प्रयास किया जाना चाहिए कि आखिर सरकार, शिक्षा विभाग तथा हिन्दी भाषा विकास विभाग के अथक प्रयासों के बावजूद हिन्दी का आज भी वह विकास क्यों नहीं हो पाया? बाजार में उपलब्ध हिन्दी भाषा की मंहगी और उच्च स्तर की पुस्तकें खरीद नहीं सकने के कारण छात्र जब सस्ती, स्तरहीन और कामचलाऊ पासबुक्स, कुजिंयाँ, वन वीक सीरीज, गाइड्स आदि को क्रय करके अधकचरा अपूर्ण और अप्रमाणिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए विवश हैं। इसके दुष्परिणाम तत्काल प्रकट नहीं होते हैं लेकिन दुरगामी दुष्परिणाम बहुत है।

हिन्दी भाषा एवं हिन्दी भाषा की प्रभावशीलता को लेकर अनेक शोध सम्पादित हुए, लेकिन 'उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में हिन्दी भाषा प्रशिक्षण की प्रभावशीलता का अध्ययन' विषय पर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है। यह कार्य एक नवाचार शैक्षिक लक्ष्य पर विद्यालय उपयोगी, समाज उपयोगी एवं बालकों के लिए फलदायी होगा। किसी भी अध्ययन की सार्थकता उसकी आवश्यकता के स्वरूप

एवं उपयोगितात्मक पहलुओं पर निर्भर करती है। साथ ही इस संदर्भ में यह देखा जाता है कि अध्ययन समाज को क्या नई दिशा देने वाला है। उपर्युक्ता मानक रूपी दृष्टिकोण को मध्यनजर रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन सार्थक एवं औचित्यपूर्ण है, क्योंकि हिन्दी भाषा के विकास के बिना देश का पूर्ण विकास संभव नहीं है।

4. अध्ययन के उद्देश्य :–

1. हिन्दी भाषा के प्रशिक्षण हेतु ट्रैनिंग मॉडल तैयार करना।
2. हिन्दी भाषा की उच्च माध्यमिक स्तर की विषयवस्तु का विश्लेषण करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में हिन्दी भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम का निर्माण करना।
4. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में हिन्दी भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रभावशीलता देखना।
5. हिन्दी भाषा कौशल विकास हेतु शोधपरक सुझाव प्रस्तुत करना।

5. सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन :–

1. **गुप्ता, एम. ए. (1987)** ने ***"हिन्दी माध्यम विद्यालयों में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर दुश्चिन्ता आशंका स्तर एवं नियंत्रण के प्रभाव पर अध्ययन"*** विषय पर शोधकार्य किया और निष्कर्ष रूप में यह पाया कि– स्कूल में आदर्श कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं दुयिश्चन्ताओं के मध्य सार्थक् ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है।[1]
2. **चौधरी, यू. (1989) ने ''भारत की विभिन्न भाषा–शास्त्रीय समुदायों की शैक्षिक आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के सम्बन्ध में भारतीय भाषा–नीति का एक आलोचनात्मक अध्ययन''** किया। इनके शोध के निष्कर्ष निम्न पाए गए – (1) हिन्दू शासन काल के दौरान सारे भारत में संस्कृत मुख्य भाषा थी। मुस्लिम काल के दौरान अरबी और फारसी कार्यालयी भाषा के रूप में आयी। बाद में दाक्खिन और उर्दू उपयोग में लाई गई। भारत की प्रशासनिक और सांस्कृतिक भाषा को निषेध कर दिया। (2) ब्रिटिश काल के दौरान और स्वतंत्रता के

[1]. Buch M.B, "Fifth Survey of Research in Education" N.C.E.R.T., New Delhi , Vol-II, (1988-92), P.P. 1894

पश्चात् मातृभाषा को एक अनुदेशन के माध्यम के रूप में प्राथकि स्तर पर स्वीकार किया गया। स्वतन्त्रता–काल के पश्चात् माध्यमिक स्तर पर सभी राज्यों और केन्द्र–शासित प्रदेशों द्वारा त्रि–भाषा सूत्र को स्वीकार किया गया।[2]

3. **विद्या, एस. (1990) ने "हिन्दी के छात्रों की निष्पत्ति उनके आत्म–सम्प्रत्यय और अभिवृत्ति पर विद्वत अधिगम व्यूह का प्रभाव"** विषय पर अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष रूप में पाया गया कि– विद्वत अधिगम व्यूह द्वारा कान्सेप्ट मॉडल अथवा ट्रेडीशनल मैथड़ की अपेक्षा अच्छा अधिगम होता है। विद्यार्थियों में परम्परागत विधि की अपेक्षा कान्सेप्ट अटेनमेन्ट मॉडल के विद्यार्थियों में निष्पत्ति की सार्थकृता उच्च थी। आत्म–सम्प्रत्यय के विकास में दोनों विधियों की तुलना में विद्वत अधिगम व्यूह अधिक अच्छा पाया गया तथा दोनों विधियों में आत्म–सम्प्रत्यय की दृष्टि से सार्थक् अन्तर नहीं पाया गया। छात्रों का हिन्दी के प्रति रूचि बढ़ाने में विद्वत अधिगम व्यूह अधिक लाभदायक सिद्ध हुआ। हिन्दी के प्रति छात्रों में सार्थक् दृष्टिकोण के विकास हेतु कॉन्सेप्ट अटेनमेन्ट मॉडल दोनों विधियों की अपेक्षा अधिक प्रभावी सिद्ध हुआ।[3]

4. **शर्मा, एस.एल. (1992) ने ''हरियाणा राज्य के कक्षा–4 के विद्यार्थियों का आधारभूत हिन्दी शब्द कोष विषय पर अध्ययन''** किया। इन्होंने अपने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि कुछ शब्दों के सम्बन्ध में सही उत्तर का प्रतिशत कम है। यह कमी इसलिए थी कि ये शब्द कठिन है। इसी प्रकार कुछ शब्दों के सम्बन्ध में सही उत्तर का प्रतिशत उच्च पाया गया क्योंकि ये शब्द अपेक्षाकृत सरल थे।

5. **चौधरी, तरूण (2009) ने :– ''कक्षा–9वीं एवं 10वीं की हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में विविध प्रकार के मूल्यों का अध्ययन"** शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि शिक्षा पाठ्यक्रम अथवा पाठ्यपुस्तकों से नहीं दी जा सकती है। यही तभी सम्भव है जब विद्यार्थियों को विविध कार्यकलापों के माध्यम से कक्षा और कक्षा के बाहर संवेदनशीलता, त्याग, निष्ठा, परोपकार, आत्मसंयम आदि मूल्यों को आत्मसात् करने का अवसर दिया जाए। विद्यार्थियों में मूल्यों को विकसित करने के लिए शिक्षक व्यवहार और आचरण भी उसी

[2] चौधरी, तरूण (2009), एम.एड. शोधकार्य, आईएएसई मान्य विश्वविद्यालय, गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर

3. "Indian Educational Review" July, 1998, P.P - 99

अनुरूप होना आवश्यक है। शिक्षक को मूल्यों पर आधारित शिक्षा, आनन्द, प्रसन्नता और हास्य के साथ प्रदान करनी चाहिए।[4]

शोधकर्ता समस्या से सम्बन्धित शोधकार्यों का पुनरावलोकन कर इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि हिन्दी भाषा प्रशिक्षण की प्रभावशीलता को सयुंक्त रूप से लेकर किया गया शोधकार्य अभी तक प्रकाश में नहीं आया है। इसलिए शोधकर्ता में यह जिज्ञासा हुई कि इस समस्या को अपने अध्ययन का मुख्य विषय बनाया जाये। इसलिये शोधकर्ता द्वारा ''हिन्दी भाषा प्रशिक्षण की प्रभावशीलता का अध्ययन'' नामक शीर्षक को अपने शोधकार्य हेतु चयनित किया गया।

6- अध्ययन का परिसीमन :-

1. प्रस्तुत शोध चूरू जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी (50 छात्र+50 छात्राए) तक सीमित रखा जायेगा।
2. प्रस्तुत शोध के प्रायोगिक कार्य हेतु जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों तक ही सीमित रखा जायेगा।

7. शोधविधि :-

प्रस्तुत शोध में उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्ता द्वारा दत्त संकलन हेतु प्रयोगात्मक शोध विधि व विवरणात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा। इस प्रकार प्रस्तुत शोध गुणात्मक तथा मात्रात्मक अर्थात् मिश्रित शोध विधि का प्रयोग किया जायेगा।

8- प्रस्तावित शोध प्रबन्ध का अध्याय क्रम :-

प्रथम अध्याय :- अध्ययन की पृष्ठभूमि।

द्वितीय अध्याय :- संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन।

तृतीय अध्याय :- हिन्दी भाषा के प्रशिक्षण हेतु ट्रैनिंग मॉडल का निर्माण।

चतुर्थ अध्याय :- हिन्दी भाषा की माध्यमिक स्तर की विषयवस्तु का विश्लेषण।

पंचम अध्याय :- शोध विधि प्रक्रिया एवं कार्यक्रम निर्माण।

षष्ठ अध्याय :- कार्यक्रम की प्रभावशीलता का अध्ययन।

सप्तम् अध्याय :- निष्कर्ष एवं सुझाव।

[4] चौधरी, तरूण (2009), एम.एड. शोधकार्य, आईएएसई मान्य विश्वविद्यालय, गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर

9. शोधकार्य में लगने वाला समय :–

प्रस्तुत शोधकार्य पूर्ण करने में अनुमानित दो वर्ष का समय लगेगा, जिसका विवरण निम्नलिखित प्रकार से किया जा रहा है :–

क्र.सं.	शोधकर्ता द्वारा किये जाने वाले शोधकार्य	अनुमानित समय
1	प्रथम अध्याय	4 माह
2	द्वितीय अध्याय	4 माह
3	तृतीय अध्याय	3 माह
4	चतुर्थ अध्याय	3 माह
5	पंचम अध्याय	3 माह
6	षष्ठ अध्याय	3 माह
7	सप्तम् अध्याय	3 माह
8	टंकण एवं बाईडिंग	1 माह
	कुल अवधि	**24 माह**

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अरोड़ा, प्रो.रीता, मारवाहा, डॉ. (श्रीमती) सुदेश (2007) ''शिक्षण एवं अधिगम के मनोसामाजिक आधार', शिक्षा प्रकाशन जयपुर, पृष्ठ संख्या 55
2. भार्गव, उषा (1993) ''किशोर मनोविज्ञान'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृष्ठ संख्या 102
3. भार्गव, महेश (1982) ''आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन'', हरप्रसाद भार्गव, कचहरी घाट, आगरा, पृष्ठ संख्या 85
4. ढ़ोढ़ियाल, एस. एवं. पाठक अरविन्द (1990) ''शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृष्ठ संख्या 73
5. जायसवाल, डॉ. सीताराम (2004) ''किशोर काल में संवेगात्मक विकास'', बाल मनोविज्ञान, पृष्ठ संख्या 119,120
6. लाल, डॉ. जे.एन० (1988) ''विकासात्मक मनोविज्ञान', नीलकमल प्रकाशन, गोरखपुर पृष्ठ संख्या – 365
7. मिश्रा, डॉ. महेन्द्र कुमार (2005) ''अधिगम का मनोसामाजिक आधार एवं शिक्षण', नीलकंठ पुस्तक मन्दिर, पृष्ठ संख्या 122
8. वर्मा, डॉ. जे.पी., औड प्रो० एल.के., (1991) ''शैक्षिक प्रशासन'' राजस्थान हिन्दी ग्रथं अकादमी, जयपुर पृष्ठ संख्या – 146.

शोध निर्देशिका के हस्ताक्षर शोधकर्ता के हस्ताक्षर